International Research Journal of Ayurveda & Yoga Vol. 9(3), pp. 13-15, May-Jun , 2026
Available online at https://acspublisher.com
ISSN: 2581-785X
DOI: **10.48165/IRJAY.2026.90303**

Research Article

कैवल्य और निर्वाण का पुनर्विचारः आत्मा और अनात्मा के संदर्भ में एक तुलनात्मक दार्षनिक अध्ययन

शोधार्थिनी– रश्मि

शोध पर्यवेक्षक – आशीष डोभाल

योग विज्ञान विभाग स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय जीवनवाला, देहरादून (उत्तराखण्ड) मो0– 8010510907, Email- kruronak@gmail.com

ABSTRACT

भारतीय दर्षन की विभिन्न परम्पराओं में 'मुक्ति' को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। सांख्य–योग दर्षन में यह मुक्ति 'कैवल्य' के रूप में तथा बौद्ध दर्षन में 'निर्वाण' के रूप में प्रतिपादित होती है। प्रस्तुत षोधपत्र का उद्देष्य इन दोनों अवधारणाओं का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना है, विषेशतः आत्मा (आत्मन/पुरुश) और अनात्मा (अनात्मन) के दार्षनिक आधारों के संदर्भ में। सांख्य–योग परम्परा पुरुश की स्वतंत्र एवं षाश्वत सत्ता को स्वीकार करते हुए कैवल्य को पुरुश और प्रकृति के पूर्ण पृथक्करण की अवस्था मानती है, जबकि बौद्ध दर्षन स्थायी आत्मा का निशेध कर निर्वाण को तृश्णा, अविद्या और दुःख के निरोध की स्थिति के रूप में स्थापित करता है। अध्ययन में यह स्पश्ट किया गया है कि यद्यपि दोनों परम्पराओं का लक्ष्य दुःख से मुक्ति है, तथापि उनके तात्त्विक आधार, साधना–पद्धति और मुक्ति–दृश्टि में मौलिक भिन्नताएँ विद्यमान हैं। यह षोध भारतीय दार्षनिक परम्पराओं में मुक्ति–सिद्धांतों की बहुलता एवं बौद्धिक गहनता को रेखांकित करता है।

मुख्य षब्दःकैवल्य, निर्वाण, आत्मा, अनात्मा, सांख्य दर्षन, योग दर्षन, बौद्ध दर्षन, मुक्ति

प्रस्तावना

भारतीय दर्षन का मूल उद्देष्य केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि मानव जीवन के दुःख, बन्धन और अस्तित्वगत संकटों का समाधान प्रस्तुत करना रहा है। इसी कारण 'मुक्ति' या 'निःश्रेयस' को लगभग सभी भारतीय दार्षनिक परम्पराओं में परम पुरुशार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि मुक्ति का लक्ष्य समान प्रतीत होता है, तथापि उसके स्वरूप, साधन और दार्षनिक आधारों में व्यापक विविधता देखने को मिलती है।

सांख्य और योग दर्षन में मुक्ति को 'कैवल्य' कहा गया है। यहाँ पुरुश को षुद्ध चेतना एवं प्रकृति से भिन्न स्वतंत्र सत्ता माना गया है। बन्धन का कारण पुरुश का प्रकृति के साथ मिथ्या तादात्म्य है, जबकि विवेक–ज्ञान के माध्यम से इस तादात्म्य का निवारण कैवल्य की प्राप्ति कराता है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्षन 'अनात्मवाद' का प्रतिपादन करता है। बौद्ध मत के अनुसार कोई स्थायी आत्मा या षाश्वत सत्ता अस्तित्व में नहीं है। व्यक्ति केवल पंचस्कन्धों का प्रवाह है। अतः मुक्ति का अर्थ किसी आत्मा की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि तृश्णा,अविद्या और 'स्व' की मिथ्या धारणा का निरोध है, जिसे निर्वाण कहा जाता है। इन दोनों दृश्टिकोणों के मध्य मूलभूत दार्षनिक भिन्नता होने पर भी दोनों का लक्ष्य दुःख से अंतिम मुक्ति है। यही तथ्य इस अध्ययन को विषेश महत्त्व प्रदान करता है। यह षोध निम्न प्रष्नों की विवेचना करता है–

ख्1, कैवल्य और निर्वाण के तात्त्विक आधार क्या हैं?

ख्2, आत्मा और अनात्मा की अवधारणाएँ मुक्ति–दर्षन को कैसे प्रभावित करती हैं?

ख्3, क्या सांख्य–योग और बौद्ध दृश्टिकोणों के बीच कोई दार्षनिक संवाद संभव है?

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

भारतीय दर्षन पर अनेक विद्वानों ने व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। सर्वपल्ली राधाकृश्णन ने भारतीय दर्षन की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों की व्याख्या करते हुए आत्मा–केन्द्रित परम्पराओं की गहन विवेचना की है। उनके अनुसार भारतीय दर्षन में मुक्ति का विचार मूलतः आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्श से सम्बद्ध है। Gerald James Larson ने सांख्य दर्षन को एक विषुद्ध दार्षनिक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करते हुए विवेक–ज्ञान को कैवल्य की प्राप्ति का मुख्य साधन माना है। Larson के अध्ययन में पुरुश और प्रकृति के द्वैत को सांख्य की मूल संरचना के रूप में समझाया गया है।

म्तपबी थ्तंनूंससदमत ने भारतीय दर्षन के ऐतिहासिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए सांख्य और बौद्ध परम्पराओं के बीच वैचारिक समानताओं तथा भिन्नताओं को रेखांकित किया है। उन्होंने यह संकेत किया कि दोनों परम्पराएँ दुःख–निरोध को लक्ष्य करती हैं, किन्तु उनके दार्षनिक आधार भिन्न हैं।

भ्ंपउम छांउनतं ने बौद्ध दर्षन के अनात्मवाद को उसकी केन्द्रीय विषेशता माना है। उनके अनुसार बौद्ध चिंतन में स्थायी आत्मा का निशेध केवल नकारात्मक प्रतिपादन नहीं, बल्कि अनुभवजन्य अस्तित्व की अनित्यता को समझने का साधन है।

यद्यपि उपर्युक्त विद्वानों ने सांख्य–योग और बौद्ध दर्षन पर महत्वपूर्ण कार्य किया है, तथापि आत्मा और अनात्मा के सापेक्ष कैवल्य और निर्वाण का प्रत्यक्ष तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत षोध इसी बौद्धिक रिक्ति की पूर्ति का प्रयास करता है।

अनुसंधान पद्धति (Methodology)

यह षोध गुणात्मक ;फनंसपजंजपअमद्ध तथा तुलनात्मक ;ब्वउचंतंजपअमद्ध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

[1]सांख्यकारिका [2]पतञ्जलि योगसूत्र

[3]पाली त्रिपिटक [4]धम्मपद

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

भारतीय दर्षन से सम्बद्ध आधुनिक विद्वानों की पुस्तकों एवं षोध–लेखों का उपयोग विष्लेशणात्मक आधार के रूप में किया गया है।

अनुसंधान पद्धति

अध्ययन में निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है–
पाठ–विष्लेशण (Textual Analysis)
तुलनात्मक vè;;u (Comparative Method)
आलोचनात्मक दार्षनिक विवेचना (Critical Philosophical Interpretation)

सांख्य–योग दर्षन में कैवल्य

सांख्य दर्षन भारतीय दर्षन की प्राचीनतम दार्षनिक परम्पराओं में से एक है। इसका मूल आधार द्वैतवाद है, जिसमें दो स्वतंत्र तत्त्वोंकृपुरुश और प्रकृतिकृको स्वीकार किया गया है। पुरुश षुद्ध चेतना, निश्क्रिय एवं साक्षी स्वरूप है, जबकि प्रकृति जड़, परिवर्तनषील और त्रिगुणात्मक है। सांख्य के अनुसार बन्धन का कारण पुरुश का प्रकृति के साथ मिथ्या तादात्म्य है। वास्तव में पुरुश कभी बन्धन में नहीं होता, किन्तु अविवेक के कारण वह स्वयं को प्रकृति के विकारों के साथ जोड़ लेता है। यही अज्ञान दुःख का कारण बनता है। ईश्वरकृश्ण की सांख्यकारिका में कहा गया है कि विवेक–ज्ञान के माध्यम से पुरुश अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है। जब पुरुश और प्रकृति का भेद पूर्णतः ज्ञात हो जाता है, तब प्रकृति पुरुश के लिए कार्य करना बंद कर देती है। यही अवस्था 'कैवल्य' कहलाती है।
पतञ्जलि योगसूत्र इस दर्षेनिक आधार को साधना–पद्धति के माध्यम से विकसित करता है। योगसूत्र का प्रसिद्ध सूत्र–
योगष्चित्तवृत्तिनिरोधः *[Yogaś citta-vṛtti-nirodhaḥ]*
चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग का आधार मानता है। योग की अश्टांग साधनाकृयम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिकृमन की षुद्धि तथा विवेक –ज्ञान की प्राप्ति के साधन हैं। योग दर्षन में कैवल्य केवल दार्षनिक अवधारणा नहीं, बल्कि साधना द्वारा प्राप्त अनुभूति है। यहाँ मुक्ति का अर्थ आत्मा की स्वतंत्र सत्ता की अनुभूति है।

बौद्ध दर्षन में निर्वाण

बौद्ध दर्षन भारतीय चिंतन परम्परा में एक विषिश्ट मोड़ प्रस्तुत करता है। बुद्ध ने स्थायी आत्मा की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए अनात्मवाद का प्रतिपादन किया। बौद्ध दृश्टिकोण के अनुसार व्यक्ति कोई स्थायी सत्ता नहीं, बल्कि निरन्तर परिवर्तनषील पंचस्कन्धों का समूह है–
[1] रूप [2] वेदना
[3] संज्ञा
[4] संस्कार [5] विज्ञान

बौद्ध दर्षन का मूल आधार चार आर्य सत्य हैं–
[1] दुःख [2] दुःखसमुदय
[3] दुःखनिरोध [4] दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा

निर्वाण को दुःख और उसके कारणों के पूर्ण निरोध की अवस्था माना गया है। यहाँ तृश्णा (तन्हा) और अविद्या ही संसार–चक्र के मूल कारण हैं। जब तृश्णा समाप्त हो जाती है, तब पुनर्जन्म और दुःख का चक्र समाप्त हो जाता है। निर्वाण की प्राप्ति के लिए बुद्ध ने आर्य अश्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया, जिसमें सम्यक दृश्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि सम्मिलित हैं। बौद्ध दर्षन में मुक्ति का अर्थ किसी षाश्वत आत्मा की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि 'मैं' और 'मेरा' की मिथ्या धारणा का विघटन है। इस प्रकार निर्वाण अस्तित्व की अनित्यता और अनात्मता के बोध से उत्पन्न मुक्ति की अवस्था है।

तुलनात्मक विष्लेशणः आत्मा बनाम अनात्मा

सांख्य–योग और बौद्ध दर्षन दोनों ही दुःख से मुक्ति को जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं, किन्तु उनकी दार्षनिक आधारभूमि में मौलिक अंतर है।

आत्मा की अवधारणा

सांख्य–योग दर्षन आत्मा (पुरुश) को षाश्वत, स्वतंत्र और अप. रिवर्तनषील सत्ता मानता है। पुरुश साक्षी चेतना है, जो प्रकृति से भिन्न है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्षन स्थायी आत्मा का निशेध करता है। 'अनात्मवाद' के अनुसार व्यक्ति केवल क्षणिक प्रक्रियाओं का प्रवाह है।

मुक्ति का स्वरूप

सांख्य–योग में कैवल्य आत्मा की प्रकृति से पूर्ण पृथकता है। यहाँ मुक्ति आत्मा की पहचान पर आधारित है। बौद्ध दर्षन में निर्वाण आत्म–धारणा के विघटन तथा तृश्णा के निरोध की अवस्था है।

साधना–पद्धति

दोनों परम्पराएँ साधना और अनुषासन को महत्त्व देती हैं। योग में चित्तवृत्ति–निरोध एवं समाधि पर बल है, जबकि बौद्ध मार्ग में ध्यान, प्रज्ञा और नैतिकता प्रमुख हैं।

समानताएँ

दोनों परम्पराओं में निम्न समानताएँ दृश्टिगोचर होती हैंकृ
ख्1, दुःख–निरोध को लक्ष्य मानना
ख्2, संसार–चक्र से मुक्ति की आकांक्षा
ख्3, साधना एवं आत्मानुषासन का महत्व
ख्4, अविद्या को बन्धन का कारण मानना
इस प्रकार, लक्ष्य की समानता के बावजूद तात्विक आधारों की भिन्नता दोनों परम्पराओं को विषिश्ट स्वरूप प्रदान करती है।

आलोचनात्मक चर्चा (Critical Discussion)

कैवल्य और निर्वाण की तुलना भारतीय दर्षन के सबसे महत्वपूर्ण दार्षनिक प्रश्नों में से एक को सामने लाती है–क्या मुक्ति के लिए आत्मा की स्वीकृति आवष्यक है?
सांख्य–योग के अनुसार आत्मा का अस्तित्व न केवल वास्तविक है, बल्कि मुक्ति का आधार भी है। यदि पुरुश की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार न किया जाए, तो कैवल्य की अवधारणा अर्थहीन हो जाती है।

इसके विपरीत, बौद्ध दर्षन यह प्रतिपादित करता है कि स्थायी आत्मा की धारण ाा ही आसक्ति और दुःख का कारण है। अतः मुक्ति आत्मा की पहचान में नहीं, बल्कि आत्म–धारणा के विघटन में निहित है।

दार्षनिक दृश्टि से यह विरोध भारतीय चिंतन की बहुलता को दर्षाता है। एक ओर आत्मा–केन्द्रित आध्यात्मिकता है, तो दूसरी ओर अनुभव–आधारित अनात्मवाद।

समकालीन चेतना–अध्ययन (Consciousness Studies) में भी यह बहस प्रासंगिक है। आधुनिक मनोविज्ञान और तंत्रिका–विज्ञान में 'स्व' (self) की प्रकृति पर हो रहे विमर्ष बौद्ध अनात्मवाद से संवाद स्थापित करते दिखाई देते हैं, जबकि चेतना की स्वतंत्र सत्ता पर आधारित सिद्धांत सांख्य–योग की ओर संकेत करते हैं।

अतः इन दोनों परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन केवल ऐतिहासिक महत्त्व नहीं रखता, बल्कि समकालीन दार्षनिक विमर्षों में भी उपयोगी है।

निश्कर्श (Conclusion)

कैवल्य और निर्वाण भारतीय दर्षन की दो महत्त्वपूर्ण मुक्ति–अवधारणाएँ हैं। दोनों का लक्ष्य मानव को दुःख और बन्धन से मुक्त करना है, किन्तु उनके दार्षनिक आधार भिन्न हैं।

सांख्य–योग दर्षन आत्मा की स्वतंत्र एवं षाष्वत सत्ता को स्वीकार कर कैवल्य को पुरुश और प्रकृति के पृथक्करण की अवस्था मानता है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्षन अनात्मवाद के आधार पर निर्वाण को तृश्णा और आत्म–धारणा के निरोध के रूप में व्याख्यायित करता है।

यह अध्ययन स्पश्ट करता है कि भारतीय दर्षन में मुक्ति की अवधारणा एक रूप नहीं, बल्कि बहुआयामी है। यही बहुलता भारतीय दार्षनिक परम्परा की सबसे बड़ी विषेशता है।

संदर्भ सूची

1ण ख1, आरण्य ह. पतञ्जलि योगदर्षन. वाराणसीरू चौखम्बा प्रकाषनय 2015.

2ण ख2, उपाध्याय ब. भारतीय दर्षन. वाराणसीरू षारदा मंदिरय 2014.

3ण ख3, देव न. बौद्ध धर्म–दर्षन. पटनारू बिहार राश्ट्रभाशा परिशद्य 2008.

4ण ख4, धर्मरक्षित भि, अनुवादक. धम्मपद. बुद्धिस्ट पब्लिकेषन सोसायटीय 2011.

5ण ख5, राधाकृश्णन स. भारतीय दर्षन. भाग 1–2. नई दिल्लीरू राजपाल एंड संसय 2009.

6ण ख6, विवेकानन्द स. राजयोग एवं योगसूत्र. कोलकातारू अद्वैत आश्रमय 2016.

7ण ख7, षर्मा रा. भारतीय दर्षन में मुक्ति का स्वरूप. मेरठरू साहित्य भंडारय 2011.

8ण ख8, षास्त्री उ. सांख्य दर्षन. दिल्लीरू विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्दय 2012.

9ण ख9, सांकृत्यायन रा. बौद्ध दर्षन. इलाहाबादरू किताब महलय 2010.

10ण ख10, हिरियन्ना म. भारतीय दर्षन की रूपरेखा. दिल्लीरू मोतीलाल बनारसीदासय 2017.

11ण ख11, थ्तंनूसससदमत म्ण *History of Indian Philosophy*ण क्मसीपरू डवजपसंस ठंदंतेपकेंय 1973ण

12ण ख12, स्तेवद ळश्रण *Classical Sāṃkhya: An Interpretation of Its History and Meaning*ण क्मसीपरू डवजपसंस ठंदंतेपकेंय 1979ण

13ण ख13, छांउनतं भ्ण *Indian Buddhism: A Survey with Bibliographical Notes*ण क्मसीपरू डवजपसंस ठंदंतेपकेंय 1980ण

14ण ख14, च्ंजं॰रंसपण *Yoga Sutras of Patanjali*ण ज्तंदेसंजमक इल ैूउप टपअमांदंदकंण ज्ञवसांजंरू ।कअंपजं ीतंउंय 2002ण

15ण ख15, त्ंकींतपीदंदै ण *Indian Philosophy*ण टवसेण 1द्ट2ण व्गवितकरू व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेय 1951ण

16ण ख16, Īśअंतांṛṣṇंण ै*āṃkhyakārikā*ण ज्तंदेसंजमक इल ळश्र स्तेवदण क्मसीपरू डवजपसंस ठंदंतेपकेंय 1998ण

17ण ख17, तैनसं ॅण ॅ*hat the Buddha Taught*ण छमू ल्वतारू ळतवअम च्तमेय 1974ण

18ण ख18, *Dhammapad*ण ज्तंदेसंजमक इल ।बींतलं ठनककींतांीपजंण ज्ञंदकलरू ठनककीपेज च्नइसपबंजपवदै वबपमजलय 1985ण